पुस्तकालय का महत्व एवं उपयोगिता

❑ दिनेश कुमार टाँक

आज भारत ही नहीं समस्त विश्व में प्रत्येक मानव के लिए साक्षर होना जीवन का अनिवार्य अंग बन चुका है । इसके साथ साथ पुस्तकों की उपयोगिता एवं पुस्तकालय का महत्व भी अधिक बढ़ गया है । पुस्तकालय का सामान्य अर्थ है पुस्तकों का भण्डार गृह जहां विभिन्न विषयों पर अध्ययन हेतु पुस्तकों का संग्रह हो।

एक विद्वान ने पुस्तकालय को प्राचीन साहित्य साधकों का समाधि स्थल कहा है । यथार्थ में पुस्तकालय में ही प्राचीन साहित्यकारों के साहित्य की अमूल्य निधि सुरक्षित मिलती है । युग युग से संचित उत्तम विचार, सुन्दर कल्पनाएं तथा घटनाएं एवं महापुरुषों की जीवन गाथाएं व प्रेरणाएं पुस्तकों में सुरक्षित रहती हैं। शरीर को स्वस्थय एवं सक्रिय रखने के लिए जैसे उत्तम भोजन की आवश्यकता होती है । इसी प्रकार मस्तिष्क के विकास के लिए उत्तम पुस्तकों की आवश्यकता होती है ।

अध्ययन वह खाद है जिसमें मानव मस्तिष्क का अंकुर विशाल अनुभव रूपी वटवृक्ष में बदल जाता है । मानव जीवन में अध्ययन की बहुत अधिक आवश्यकता है । मस्तिष्क का विकास करने, मानसिक एवं बौद्धिक शक्तियों को उन्नत करने तथा जीवन को आनन्द प्रदान करने के लिए अध्ययन ही रामबाण औषधि है । अर्थात पुस्तक वह दर्पण है, जिसमें व्यक्ति को समाज का प्रतिबिम्ब दिखाई देता है ।

मस्तिष्क को खुराक देने हेतु अध्ययन का सबसे अच्छा साधन वर्तमान में पुस्तकालय है । जहां पर वे महान पुरूषों की जीवन गाथायें हमारे जीवन को मार्गदर्शन प्रदान करती हैं । पुस्तकालयों में स्वतन्त्र रूप से व्यक्ति अपनी रूचि के अनुसार पुस्तक चयन कर उसके अध्ययन का आनन्द प्राप्त करता है । महात्मा गांधी ने कहा था - ''जिसे पुस्तक पढ़ने का शौक है, वह सब जगह सुखी रहता है ।'' अध्ययन से प्रसन्नता, शोभा व योग्यता प्राप्त होती है ।

आधुनिक युग में व्यक्ति स्थानीय, देश-विदेश आदि की जानकारी प्राप्त करता है तथा विभिन्न महापुरूषों की जीवनियों से स्वयं प्रेरणा प्राप्त कर अपना चरित्र निर्माण करता है। अध्ययनशील व्यक्ति उस भरे हुऐ मेघ के समान है जो दूसरों का ही हित करता है। किसी भी संस्थान, गांव देश के स्थानीय व्यक्तियों की विचारधारा, रहन-सहन, चरित्र, वातावरण एवं शिक्षा स्तर आदि की जानकारी वहां स्थित पुस्तकालय की समृद्धि एवं सुदृढ़ता एवं वहां के लोगों की उसमें रुचि देखकर ही पता लगायी जा सकती है ।

जहां पर पुस्तकालय सुदृढ़ होगा, वहां का प्रत्येक नागरिक शिक्षित, जागरूक, चिन्तनशील एवं अपने विचारों को रखने में सक्षम होगा ।

ज्ञान ही मनुष्य का धन है ज्ञान के अभाव में मनुष्य अन्य जीवधारियों की भांति आहार, निद्रा, भय एवं मैथुन की चिन्ता मात्र करने वाला कोरा पशु होता है । आज इसी ज्ञान को पुस्तकों के माध्यम से प्राप्त कर बडे बडे ज्ञानी और दार्शनिक, कवि एवं महापुरुष बने हैं । संसार की सामाजिक एवं आर्थिक व्विस्था बदलने वाला दार्शनिक कवि मार्क्स सात वर्षों तक निरन्तर बर्लिन के पुस्तकालय में बैठकर ज्ञान उपलब्ध करता रहा।

पुराने जमाने में पुस्तकालय पुस्तकों के रखरखाव एवं उनकी सुरक्षा का ही काम करता था। लेकिन वर्तमान में पुस्तकालय का उद्देश्य पुस्तकों का संग्रह ही नहीं बल्कि उसका अधिकतम् उपयोग कराने में है । आज कोई भी व्यक्ति पुस्तकालय का सदस्य बनकर जीवन पर्यन्त उसका लाभ उठा सकता है । उसे जब चाहे पुस्तक प्राप्त हो सकती है । व्यक्ति अपने शिष्टाचार एवं पुस्तकालय नियमों के अधीन पुस्तकें प्राप्त करता है, तो पुस्तकालयाध्यक्ष उसकी सेवा में हर समय तत्पर रहता है । वह पाठक की जिज्ञासा को बहुत पहले ही जान लेता है ।

सार्वजनिक पुस्तकालय जनता में बौद्धिक विकास कर उनमें प्रजातन्त्र के उपयुक्त राजनैतिक चेतना जागृत कर सकते हैं । आज भारत जैसा देश विश्व में अपनी सभ्यता एवं संस्कृति के लिए विशिष्ट माना जाता है । यह सारी धरोहर पुस्तकालयों में संगृहीत है । जिस गांव, नगर, कस्बा, स्कूल में पुस्तकालय स्थित है वह उतना उन्नत एवं प्रगतिशील माना जाता है । पुस्तकालयों में व्यक्ति बिना किसी भेदभाव, जांतपांत, भाषाधर्म और विचारों के भेद के समान भाव से आदर पाता है ।

आज विज्ञान, शिल्प, प्रौद्योगिकी, और विविध कलाओं का तीव्रता से विकास हो रहा है । उसका ज्ञान अतिरिक्त पुस्तकों के अध्ययन से ही प्राप्त हो सकता है । इस के लिए पुस्तकालय वरदान साबित हो रहे हैं । अत: हमें नवीन पुस्तकालयों की स्थापना कर उनका अधिक से अधिक उपयोग करना चाहिये । ये ही तो हमें अज्ञान से ज्ञान की और अंधकार से प्रकाश की ओर ले जा सकते हैं । पुस्तकालय राष्ट्र की धरोहर है । प्रत्येक नागरिक को उसका उपयोग करते हुए उसकी रक्षा करने का पुनीत कर्त्तव्य है।◆